



"दोहा" क्रमांक-१६९

१. गुरु प्रथा प्राचीन है - रोज नवाऊँ माथ ।
कृपा "श्रीबाबाश्री" गुरु चरण की - हो गई रेवा साथ ॥
२. दुनियाँ दरिया बन गई - रेवा बनी जहाज ।
अब "श्रीबाबाश्री" सत्-धर्म से- धरो धरनी की लाज ॥
३. माँ-ने सब कुछ दे दिया - देख "श्रीबाबाश्री" के भाव ।
फंसी आज मझधार में - जगत जीव की नाव ॥
४. माटी रो-रो-कह रही- कलयुग के सब खेल ।
सत्य "श्रीबाबाश्री" का धर्म है - माटी से कर मेल ॥
५. माटी की धरनी बनी - निकर गये युग तीन ।
मिला जहर कलिकाल में - भई "श्रीबाबाश्री" धरा दीन ॥
६. जीवन इक नदिया बनीं - "रेवा" बनी जहाज ।
सत्य-धर्म लोहा बने - रखी "श्रीबाबाश्री" की लाज ॥
७. बात जिया की मान लो - रोवो मन को काम ।
चल रहीं साथ "श्रीबाबाश्री" के "रेवा" इनको नाम ॥
८. पल-दो पल को छोड़ दो - जीवन को जंजाल ।
जो "श्रीबाबाश्री" हरिहर भजे - उन्हें न व्यापे काल ॥
९. एकई हरिहर अंग हैं - इक दूजे के नाथ ।
ऊँचे भाग "श्रीबाबाश्री" के - जौहरी अपने साथ ॥

१०. पिसो मनई मन पाट में - जिया न पावै ठौर ।
हर पल "रेवा" करत हैं - दास "श्रीबाबाश्री" पे गौर ॥
११. शुद्ध भाव जो कोई करे - वो "श्रीबाबाश्री" फल पाय ।
सात लोक की मालकिन - पिता सहित मिल जाय ॥
१२. मात-पिता दोऊ मिल गये - चल "श्रीबाबाश्री" चहुँ ओर ।
दो अंसुअन की धार पे - "रेवा" है चितचोर ॥
१३. श्री चरण चिन्ह हिय में बसे - श्री मात पिता जी के आज ।
श्री "रेवा"जी साथ "श्रीबाबाश्री"जी के - और चलें श्री गणराज ॥
१४. होत उदय जब पुन्य को- शुभ कर्मों के साथ ।
हिम "श्रीबाबाश्री" रेवा बसी - चली पकड़ के हाथ ॥
१५. मानुष तन अनमोल है - विरथा नहीं गमाव ।
अब "श्रीबाबाश्री" हर जन्म में - माँ से नेह लगाव ॥
१६. करनी करके रो रहे - जग के सब नर-नार ।
है "श्रीबाबाश्री" मुख महा - लियो जनम को सार ॥
१७. जी-चाही हर चीज लो - छोड़ दो मनसे मैल ।
तब "श्रीबाबाश्री" सीधी करे - जग की उल्टी गैल ॥
१८. न भागो दूर "श्रीबाबाश्री" से-है सच्चा दरबार ।
जग में उल्टी बह रही - "श्री माँ रेवा जी" की धार ॥
१९. जीतई, जियरा पिस रहो - मनुआं है बेचैन ।
मैया दास "श्रीबाबाश्री" से - है प्रसन्न दिन रैन ॥

२०. जग-माटी-के दियों से - मिटा रहो अंधियार ।
संग "श्रीवावाश्री" "रेवा" मणि - कर दे जग उजियार ॥
२१. समय बहुत अनमोल है - अब न "श्रीवावाश्री" गमाँव ।
रेवा की दई विधि से - हँसत-हँसत फल पाव ॥
२२. इन्हें काय-अजमात हो - कोनऊ अन्त न पाय ।
देव लोक के, सब धनी - साथ "श्रीवावाश्री" के आय ॥
२३. रोज दया को देखते - अब न बनो गमाँर ।
"मात पिता रेवा" सहित - आये "श्रीवावाश्री" तेरे द्वार ॥
२४. कई जन्मों के पुन्य से, मिला "श्रीवावाश्री" संयोग
मन न छोड़े कुटिलता, तासैं भलो वियोग
२५. भला अपने वर्ण का ही नहीं, भला हो सभी वर्णों का
धोखे से ज्ञान दे चला, "श्रीवावाश्री" श्याम वर्ण का

-----X-----X-----